विश्व आयुर्वेद परिषद--एक परिचय

विश्व को आरोग्य का संदेश देने वाले आयुर्वेद के सिद्धान्त और व्यवहार दोनों ही आज अपने देश में ही उपेक्षा और तिरस्कार के शिकार हैं। किन्तु स्मरणीय है कि ये केवल आयुर्वेद की ही हानि नहीं है अपितु देश के सभी नागरिकों तथा वस्तुत: विश्व की रोगत्रस्त मानवता की हानि है और इस ज्ञान को पुन: सुस्थापित करने का प्रयास और अभियान का नाम है -विश्व आयुर्वेद परिषद

वर्तमान प्रचलित चिकित्सा पद्धति एवं औषधि व्यवस्था के दीर्घकालीन परिणामों से चिन्तित विश्व के विचारक इस तथ्य से सहमत होते जा रहे हैं कि प्रकृति पर आधारित आयुर्वेद के द्वारा सभी को सरल, सहज, पर्यावरण मित्र, सस्ती एवं दुष्परिणामों से रहित चिकित्सा पद्धति प्रदान की जा सकती है। आयुर्वेद का उद्भव केन्द्र होने के नाते स्वाभाविक रूप से इस कार्य की पहल भारतवर्ष के आयुर्वेदज्ञों को ही करनी होगी।

आयुर्वेद सम्मत समग्र जीवन शैली (Holistic Life Style) के प्रचार-प्रसार से आधुनिक जीवन शैली के परिणामस्वरूप होने वाली अनेक घातक बीमारियों से बचा जा सकेगा। इससे मानव की कार्यक्षमता में अकल्पनीय वृद्धि होगी तथा आर्थिक समृद्धि का मार्ग भी प्रशस्त होगा। इस बिन्दु को ध्यान में रखकर ही विश्व आयुर्वेद परिषद कार्यरत है।

विश्व आयुर्वेद परिषद ऐसे आयुर्वेद अनुरागियों का एक सामूहिक मंच है जहाँ सभी कार्यकर्त्ता अपनी-अपनी क्षमताओं को आयुर्वेद की श्री वृद्धि के लिए समर्पित कर स्वस्थ और समृद्ध देश एवं विश्व के निर्माण के लिए साधानारत हैं। दो मुख्य कार्य हमारे सम्मुख हैं -

(क) सभी ऐसे बन्धुओं से सम्पर्क कर उनकी शक्ति-सामर्थ्य में वृद्धि करने का आग्रह एवं प्रयास।

(ख) आयुर्वेद की श्री वृद्धि के लिए उस शक्ति का नियोजन।

आप सबके सहयोग से यह कार्य निश्चय ही यथार्थ में परिवर्तित होकर आयुर्वेद पुन: अतीत के गौरव को प्राप्त करेगा। इसी विश्वास के साथ आपका सहयोग आमन्त्रित है।

परिषद के प्रमुख उद्देश्य

1.प्रकृति आधारित जीवन शैली के विभिन्न आयामों जैसे दिनचर्या, ऋतुचर्या, सद्वृत्त, आचार रसायन एवं योग, जड़ीबूटी कृषि, सरल औषधि निर्माण, नाड़ी विज्ञान एवं अन्य परम्परागत ज्ञान आदि के संरक्षण, संवर्धान व विकास हेतु योजना बनाना एवं क्रियान्वित करना।

2.आयुर्वेद चिकित्सकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, उत्पादकों, औषधि निर्माताओं आदि को संगठित कर आत्मविश्वास एवं श्रद्धा जागरण हेतु विविध तकनीकी एवं वैज्ञानिक विधाओं का शिक्षण, प्रशिक्षण, प्रदर्शन, परिचर्चा एवं स्वास्थ्य शिविर आदि माध्यमों से क्रियान्वयन करना।

3.आयुर्वेद के सिद्धान्तों तथा जड़ी बूटियों एवं उनकी गुणवत्ता से जन-सामान्य को परिचित कराना।

4.देश विदेश की सरकारी तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ आयुर्वेद के सर्वांगीण विकास में सहयोग देने एवं लेने के लिये विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन।

देश में आयुर्वेद की पुनः प्रतिष्ठा हेतु हमारे प्रस्ताव

(क) आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति घोषित किया जाये।

(ख) आर्थिक संकल्प पत्र (बजट) में आवश्यक भागीदारी।

(ग) केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सेवाओं में अवसरों की समान उपलब्धता।

(घ) विद्यार्थी चयन में एकरूपता।

(ङ) प्रत्येक प्रान्त में स्वतंत्र आयुर्वेद मंत्रलय एवं विश्वविद्यालय।

(च) सभी प्रदेशों में नवीन शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालयों की स्थापना।

(छ) आयुर्वेद शिक्षा को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से जोड़ा जाये।

(ज) आयुर्वेद शिक्षकों, चिकित्साधिकारियों, विद्यार्थियों आदि के वेतन एवं मानदेय (स्टाइपेन्ड) आदि में व्याप्त विषमताओं को दूर किया जाये।

प्रमुख गतिविधियाँ

व्यक्तित्व एवं कौशल विकास शिविर–आयुर्वेद के विद्यार्थियों में स्वाभिमान, अधययन के प्रति गम्भीरता, समाज के प्रति संवेदनशीलता, राष्ट्रीयता आदि गुणों के विकास तथा मर्मविज्ञान का चिकित्सकीय उपयोग, पंचगव्य चिकित्सा, नाड़ी विज्ञान, क्षार चिकित्सा, पंचकर्म आदि आयुर्वेद की विधाओं के वैज्ञानिक पक्षों का स्पष्टीकरण तथा प्रयोगात्मक प्रशिक्षण आदि का कार्य प्रारम्भ सुस्थापित आयुर्वेद चिकित्सकों द्वारा नये स्नातकों की प्रशिक्षण व्यवस्था।

पत्रिका प्रकाशन – आयुर्वेद शोध, परम्परागत प्रयोगों के वैज्ञानिक पक्षों से परिचय, वनस्पति, औषधि निर्माण, रोग निदान आदि पक्षों के व्यवहारिक स्वरूप से परिचित कराने हेतु पत्रिका का नियमित प्रकाशन। शोध कार्य के प्रकाशन हेतु आई.एस.एस.एन. द्वारा मान्यता प्राप्त।

विद्यार्थी प्रोत्साहन प्रतियोगिताएँ –विद्यार्थियों में आयुर्वेद के प्रति गम्भीर चिन्तन एवं अधययन की आदत को विकसित करने तथा समाज के प्रतिष्ठित आयुर्वेदज्ञों को सम्मान देने हेतु प्रान्तीय एवं अखिल भारतीय स्तर पर निबन्ध लेखन तथा क्विज आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन।

शिक्षक, लेखक एवं आदर्श चिकित्सक सम्मान–परिषद का विचार है कि आयुर्वेद शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के प्रयास द्वारा ही सम्भव है इसलिए आयुर्वेद शिक्षकों में गुणवत्ता वृद्धि की इच्छाशक्ति जागृत करने हेतु उत्कृष्ट आयुर्वेद शिक्षकों, लेखकों एवं चिकित्सकों को प्रोत्साहित करने हेतु कार्यक्रम।

शिक्षण में गुणवत्ता का विकास – आयुर्वेद शिक्षण के सभी पक्षों शिक्षार्थी, शिक्षक, कालेज संचालक, प्राचार्य, प्रशासन, आयुष के अधिकारीगण तथा केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (सी.सी.आई.एम.) के अधिाकारियों एवं सदस्यों, विश्वविद्यालयों के पूर्व/वर्तमान कुलपति आदि श्रेष्ठ विद्वानों को सामूहिक मंच प्रदान कर संवाद द्वारा शिक्षा में गुणवत्ता क्रियान्वयन पर सार्थक संगोष्ठियों का प्रारम्भ तथा अन्य सम्बन्धित विषयों पर सम्पूर्ण देश में विशाल वैज्ञानिक गोष्ठियों का आयोजन आदि।

स्वस्तिक प्रचार अभियान – मंगलकारी स्वस्तिक का चिकित्सा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रयोग का आह्वान।